समावेशन | एक मूल अधिकार

आदिवेप्पा कुरी

जैसे ही उसका नाम पुकारा जाता है, वह चाहे कहीं भी हो, माधव दौड़ा-दौड़ा अपने शिक्षकों के आगे आकर खड़ा हो जाता है। शिक्षक उसे हर कार्य के लिए बुलाना पसन्द करते हैं। न तो वह धाराप्रवाह बोल पाता है और न ही पढ़ने-लिखने में कुशल है पर फिर भी वह पूरे स्कूल का लीडर है।

कक्षा एक में भर्ती होने के समय, इस बच्चे को अपने रोज़मर्रा के काम करने में भी दिक़्क़त आती थी। पर अब वह किसी भी दूसरे बच्चे की तरह अपना सारा काम स्वयं करता है और सभी के साथ मिल-जुलकर रहता है। अब स्कूल का दौरा करने वाले लोगों से बात करने का आत्मविश्वास आ गया है माधव में।

समावेशन से बदलाव

माधव एक विशेष आवश्यकताओं वाला बच्चा है। उसमें यह परिवर्तन, उसके शिक्षकों के प्यार, स्नेह और उनके द्वारा दिए गए अवसरों के कारण सम्भव हुआ है। यह इस बात का भी प्रमाण है कि यदि सही अवसर और सहायता दी जाए तो सभी बच्चों को साथ लेकर आगे बढ़ना मुमकिन है। और समानुभूति से कहीं अधिक यह उनका अधिकार है कि उन्हें ऐसे अवसर मिलें। केवल समानुभूति ही पर्याप्त नहीं है, सीखने या शारीरिक अक्षमता से जूझ रहे बच्चों को विकसित होने के अवसर दिए जाने चाहिए। उनसे धैर्य, प्रेम और सम्मान के साथ व्यवहार करने की आवश्यकता है जो उन्हें सीखने की प्रक्रिया में मदद करेगी और यह संविधान में निहित समानता और न्याय के उनके अधिकार का हिस्सा है।

कुछ साल पहले हमने विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए सुरपुर में एक मेले का आयोजन किया था। इसे सफल बनाने के लिए हमारी टीम ने लगभग दो महीने बड़ी कड़ी मेहनत की। मेले के दिन जिस तरीक़े से हर बच्चे ने अपने टॉपिक को प्रदर्शित किया, उसे देखकर शिक्षक और माता-पिता मंत्रमुग्ध हो गए थे और असीम प्यार और सराहना से भर उठे थे। उस दिन हमें कुछ ऐसा कर गुज़रने का एहसास हुआ जिसे हम शब्दों में बयां नहीं कर सकते। बच्चों के कारण हमें ख़ुद पर गर्व हो रहा था!

हम लोगों के बीच अभी भी यह धारणा बैठी हुई है कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चे, परिवार व समाज पर बोझ होते हैं। इन बच्चों में अन्तर या कमियाँ देखने के बजाय हमें इस बात पर ग़ौर करना चाहिए कि हमारी व्यवस्था में उनके शिक्षा के अधिकार को कैसे सुनिश्चित किया जाए। यह मेरा विश्वास है कि यदि शिक्षक अपना मन बना लेते हैं, तो हर बच्चे को अच्छी शिक्षा दी जा सकती है। जब एक विशेष आवश्यकताओं वाली 7 वर्षीय बच्ची के माता-पिता को माधव की प्रगति के बारे में पता चला, तब उन्होंने भी अपनी बच्ची को उसी स्कूल में भर्ती कराया। अब वह बच्ची भी अपने रोज़मर्रा के कार्य स्वतंत्र रूप से करने में सक्षम हो गई है और बच्ची के माता-पिता उसके इस परिवर्तन से बहुत ख़ुश हैं।

विविध सामाजिक समूह

राजकीय प्राथमिक विद्यालय, शादीमहल (मुद्गल, ब्लॉक-लिंग्सगुर, ज़िला-रायचूर) में विविध सामाजिक पृष्ठभूमि के बच्चे आते हैं। वर्तमान में 42 बच्चे यहाँ पढ़ाई कर रहे हैं, जिनकी मातृभाषा अलग-अलग है (इनमें से 18 तेलुगू, 5 मराठी, 8 उर्दू बोलते हैं और 1 बच्चे की मातृभाषा कुंचाटी है (*कूँचिकोरवास* लोगों की भाषा), और बाक़ी बच्चों की मातृभाषा कन्नड़ है। इन बच्चों के माता-पिता नाट्य कलाकार (*हगालू वेशगारारू*), राजमिस्त्री (*कल्लू कुटिगारू*), टोकरी बुनने, चूड़ी बेचने, रसोई के छोटे सामान बेचने आदि का काम करते हैं। वहीं कुछ अभिभावक भीख माँग कर जीवनयापन करते। वे झुग्गी-झोपड़ियों में रहते हैं। और इनमें से कुछ बच्चे स्कूल के बाद भीख माँगने जाते हैं। जिन बच्चों की मातृभाषा कन्नड़ नहीं है, वह भी कन्नड़ अच्छी तरह बोलते हैं क्योंकि यह उनकी आजीविका की भाषा है।

इसके बावजूद भी, शिक्षकों में निहित समानता और सामाजिक न्याय की भावना के कारण, ऐसी विविध सामाजिक पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों में किसी भी प्रकार की हीन भावना नहीं है। एक बात जो स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आती है वह यह है कि बच्चे खुल कर एक-दूसरे के साथ खेलते, भोजन साझा करते, एक साथ काम करते, और एक-दूसरे की मदद करते हैं। शिक्षकों में बच्चों के लिए प्यार और करुणा है।

शिक्षकों की भूमिका

बच्चे स्कूल में जब पहली कक्षा में भर्ती होते हैं उस समय उन्हें स्कूल की प्रक्रियाओं से सामंजस्य बैठाने में कठिनाइयाँ आती हैं। वे अक्सर बाहर जाना चाहते हैं और दूसरों से मिलने-

जुलने में भी हिचकिचाते हैं। एक शिक्षिका, सुश्री प्रमिला न केवल बच्चों के जीवन का सम्मान करती हैं बल्कि स्कूल में कुछ समय के लिए वरिष्ठ विद्यार्थियों को छोटी कक्षाओं के विद्यार्थियों के साथ बातचीत का मौक़ा देती हैं। चूँकि वे बच्चों की भाषा में बातचीत कर सकती हैं, इस कारण बच्चे उनसे खुलकर अपनी भावनाएँ साझा करते हैं। वह बच्चों को गीत गाने और कहानियाँ सुनाने के लिए प्रोत्साहित करने के साथ-साथ उन्हें अपने दैनिक जीवन को व्यापक सन्दर्भों में समझने मदद करती हैं। बच्चों के सामाजिक परिवेश सम्बन्धी पूर्व-ज्ञान का भी वे अच्छा उपयोग करती हैं। बच्चों द्वारा किए गए छोटे-से-छोटे काम को भी पहचान और सराहना मिलती है। शिक्षिका के लोकतांत्रिक दृष्टिकोण के कारण बच्चों में आत्म-मूल्य की भावना विकसित होती है। शिक्षिका से बात करने पर, यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि वे प्रत्येक बच्चे को अच्छी तरह से जानती हैं और यह भी जानती हैं कि हर एक विद्यार्थी क्या और कैसे सीख रहा है।

प्रमिला इन बच्चों की क्षमताओं को अच्छी तरह जानती हैं। वह बच्चों के रोज़मर्रा के अनुभवों को और समृद्ध करने के लिए नली-कली पद्धति का उपयोग करती हैं। वह बच्चों को बात करने, एक-दूसरे के साथ चर्चा करने और अपनी बात खुलकर व्यक्त करने का मौका देती हैं। ज़्यादातर बच्चों को कहानी सुनाना, चित्र बनाना और मिट्टी से खिलौने बनाना पसन्द है। ऐसा इसलिए है क्योंकि स्कूल में आने से पहले भी कई बच्चों के पास, आस-पास के गाँवों के स्थानीय मेलों में अपने माता-पिता के साथ खिलौने और बरतन बेचने का अनुभव होता है। इस कारण, इस स्कूल के बच्चे हर साल आयोजित होने वाले टैलेंट शो (प्रतिभा करंजी) में चित्र बनाने और कहानी सुनाने जैसे कार्यक्रमों में भाग लेते हैं।

संक्षेप में कहें तो इस स्कूल में, बच्चे साक्षरता प्राप्त करने के साथ ही जीवन के बारे में भी सीखते हैं। बच्चे हर दिन स्वेच्छा से स्कूल आते हैं। स्कूल एक परिवार की तरह है और सीखना हर उस चीज़ का एक हिस्सा है जो बच्चे स्कूल में करते हैं। यह तथ्य कि बच्चे स्वतंत्र रूप से बात करने में सक्षम हैं और उनकी प्रतिभाओँ को यहाँ प्रोत्साहन मिलता है, यह दर्शाता है कि संवैधानिक संकल्पनाओं को लागू करना सम्भव है और सभी स्कूलों में इसे वास्तविकता में बदला जा सकता है।

बच्चों की पहचान सुरक्षित रखने के लिए नाम बदले गए हैं।



आदिवप्पा कुरी पिछले दस वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ज़िला संस्थान, रायचूर, कर्नाटक के साथ काम कर रहे हैं। उन्होंने डीएसईआरटी, बेंगलूरु द्वारा आयोजित गुरुचेतना कार्यक्रम में योगदान दिया है। उनसे adiveppa.kuri@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी